माध्यमिक अंग्रेज़ी

समझने के लिए पठन को प्रोत्साहित करना

भारत में विद्यालय आधारित
समर्थन के माध्यम से
शिक्षक शिक्षा

www.TESS-India.edu.in

http://creativecommons.org/licenses/

The Open University

UKaid
from the British people

संदेश

शिक्षकों को बाल केंन्द्रित कक्षा अभ्यास की ओर उन्मुख करने तथा शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के उद्देश्यों को सम्मुख रखते हुए TESS-India राष्ट्रीय स्तर पर कार्यरत है। इस दिशा में TESS-India द्वारा मुक्त शैक्षिक संसाधन (Open Educational Resources) का विकास किया गया है । ये संसाधन शिक्षकों तथा शिक्षक–प्रशिक्षकों के वृत्ति विकास (Professional development) में लाभकारी एवं उपयोगी सिद्ध होंगे। राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार के नेतृत्व में इन संसाधनों का स्थानीयकृत किया गया है, जिसके अन्तर्गत इनके उद्देश्य के मूल को बरकरार रखते हुए इनमें स्थानीय, भाषा, बोली, प्रथाओं, संस्कृतियों तथा नियमों को सम्मिलित किया गया है। इनका उपयोग शिक्षण कार्य में सहजता एवं सुगमता पूर्वक किया जा सकता है ।

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार के मार्गदर्शन में TESS-India द्वारा स्थानीय भाषा में तैयार मुक्त शैक्षिक संसाधन (Open Educational Resources) नेट पर आप सभी के लिए सुलभ उपलब्ध है ।

शुभकामनाओं सहित ।

(डॉ0 मुरली मनोहर सिंह)
निदेशक
एस0सी0ई0आर0टी0, बिहार

समीक्षा एवं दिशाबोध
डॉ. मुरली मनोहर सिंह, निदेशक राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. सैयद अब्दुल मोईन, विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा विभाग, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. क़ासिम खुर्शीद, विभागाध्यक्ष, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्
डॉ. इम्तियाज़ आलम, विभागाध्यक्ष, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. स्नेहाशीष दास राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. अर्चना, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. रीता राय, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
श्री तेज नारायण प्रसाद, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार

स्थानीयकरण
भाषा और शिक्षा
डॉ. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी, प्राचार्य, मैत्रेय कॉलेज ऑफ एडुकेशन एण्ड मैनेजमेंट, हाजीपुर, वैशाली
श्री सुमन सिंह, प्रखंड साधनसेवी, भगवानपुर हाट, सिवान
श्री कात्यायान कुमार त्रिपाठी, प्राथमिक विद्यालय चैलीटाल, पटना
श्री कृत प्रसाद, प्रखंड साधनसेवी, हिलसा, नालंदा
प्राथमिक अंग्रेज़ी
श्री अरशद रज़ा, सहायक शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय, पचासा रहुई, नालंदा
श्री संतोष सुमन, सहायक शिक्षक, बालिका उच्च विद्यालय, महुआबाग
श्री शशि भूषण पाण्डेय, सहायक शिक्षक, उत्क्रमित मध्य विद्यालय, मुकुन्दपुर, नालंदा
श्रीमती रचना त्रिवेदी, शिक्षिका, नोट्रेडेम अकादमी, पटना
माध्यमिक अंग्रेज़ी
श्री मणिशंकर, प्रधानाध्यापक, तारामणी भगवानसाव उच्च माध्यमिक विद्यालय, कोइलवर, भोजपुर
डॉ. ब्रजेश कुमार, शिक्षक, पी. एन. एंग्लो संस्कृत माध्यमिक विद्यालय, नया टोला, पटना
प्राथमिक गणित
श्री कृष्ण कान्त ठाकुर
श्री दिलीप कुमार, संकुल संसाधन केन्द्र समन्वयक, बुलनी हैदरपुर, नालंदा
श्री गोविन्द प्रसाद, प्रखंड साधनसेवी, चनपटिया, पश्चिमी चम्पारण
माध्यमिक गणित
डॉ. राकेश कुमार, भागलपुर डायट
श्री रिज़वान रिज़वी, उत्क्रमित मध्य विद्यालय, सिलौटा चाँद, कैमूर
श्री इन्द्रभूषण कुमार, शिक्षक, सहयोगी माध्यमिक विद्यालय, हाजीपुर, वैशाली
प्राथमिक विज्ञान
श्री मनोज त्रिपाठी, प्रखंड साधनसेवी, बरहारा, भोजपुर
श्री शशिकान्त शर्मा, प्रखंड साधनसेवी, आरा, भोजपुर
श्री रणबीर सिंह, संकुल संसाधन केन्द्र समन्वयक, आदर्श आवासीय मध्य विद्यालय शिक्षक संघ, सहरसा
माध्यमिक विज्ञान
श्री जी.वी.एस.आर प्रसाद
श्री मुकुल कुमार, शिक्षक, सहायक शिक्षक, गोरखनाथ सूर्यदेव माध्यमिक विद्यालय, राजापाकर वैशाली

TESS-India (Teacher Education Through School Based Support) का लक्ष्य है भारत में मुक्त शैक्षिक संसाधनों के द्वारा प्राथमिक और माध्यमिक स्तरों पर शिक्षकों के कक्षा अभ्यासों को बेहतर करना। ये संसाधन शिक्षकों के छात्र–केन्द्रित, भागीदारी दृष्टिकोण को विकसित करने में सहायता करेंगे।

TESS-India के मुक्त शैक्षिक संसाधन (Open Education Resources – OERs) शिक्षकों को स्कूल की पाठ्यपुस्तक के लिए सहायक पुस्तिका प्रदान करते हैं। ये संसाधन शिक्षकों के लिए गतिविधियाँ प्रदान करते हैं जो वे कक्षा में अपने छात्रों के साथ कर सकते हैं। साथ ही इनमें केस स्टडी भी हैं जो ये दर्शाते हैं कि किस प्रकार दूसरे शिक्षकों ने उस विषय को सिखाया है। संबंधित संसाधन शिक्षकों को पाठ योजना बनाने में और विषय पर ज्ञान वर्धन करने में उनकी सहायता करते हैं।

TESS-India के मुक्त शैक्षिक संसाधन भारतीय पाठ्यक्रम और संदर्भों के अनुकूल हैं। ये *भारतीय तथा अतंर्राष्ट्रीय लेखकों के सहयोग से तैयार* किये गये हैं *और ये ऑनलाइन तथा प्रिंट उपयोग के लिए उपलब्ध है (http://www.tess-india.edu.in)।* मुक्त शैक्षिक संसाधन अनेकों संस्करणों में उपलब्ध हैं जो प्रत्येक राज्य के लिए उपयुक्त है जहाँ TESS India कार्यरत है। उपयोगकर्ता इन संसाधनों को अनुकूल और स्थानीयकृत करने के लिए स्वतंत्र हैं ताकि ये स्थानीय आवश्यकताओं और संदर्भों को पूरा कर सकें।

TESS-India मुक्त विश्वविद्यालय, ब्रिटेन के नेतृत्व में तथा ब्रिटेन की सरकार द्वारा वित्त-पोषित है।

वीडियो संसाधन

इस इकाई की कुछ गतिविधियों के साथ निम्न प्रतीक का उपयोग किया गया है: *. इससे संकेत मिलता है कि निर्दिष्ट अध्यापन संबंधी थीम के लिए TESS-India वीडियो संसाधनों को देखना आपके लिए उपयोगी होगा।*

TESS-India वीडियो संसाधन भारत में अनेक प्रकार की कक्षाओं के संदर्भ में मुख्य अध्यापन तकनीकों का वर्णन करते हैं। हमें आशा है कि वे आपको इसी प्रकार के अभ्यासों के साथ प्रयोग करने के लिए प्रेरित करेंगे। उनका उद्देश्य पाठ (टेक्स्ट) पर आधारित इकाइयों के माध्यम से काम करने के आपके अनुभव का पूरक होना और उसे बढ़ाना है।

TESS-India वीडियो संसाधनों को ऑनलाइन देखा या TESS-India की वेबसाइट, http://www.tess-india.edu.in/ से डाउनलोड किया जा सकता है। वैकल्पिक रूप से, आप ये वीडियो सीडी या मेमोरी कार्ड के माध्यम से भी देख सकते हैं।

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन–शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है:
http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/

TESS-India is led by The Open University UK and funded by UK aid from the UK government

यह इकाई किस बारे में है

माध्यमिक विद्यालय के मेरे कई छात्र–छात्राओं को पाठ्यपुस्तक के अंग्रेजी पाठों को पढ़ते समय उन्हें समझने में कठिनाई होती है। पाठ अक्सर लंबे होते हैं, और उनमें ऐसे कई शब्द होते हैं जिन्हें छात्र–छात्रा नहीं जानते। मुझे आम तौर पर हर चीज का अनुवाद करना पड़ता है। क्या ऐसे अन्य तरीके हैं जिनसे मैं अपने छात्र–छात्राओं की अंग्रेजी के अध्यायों को पढ़ने और समझने में सहायता कर सकती हूँ?

कभी–कभी जब छात्र–छात्रा किसी ऐसी भाषा में पढ़ते हैं जिसे वे सीख रहे हैं, जैसे अंग्रेजी, तब वे उन शब्दों पर जिन्हें वे नहीं जानते हैं, या उन व्याकरणात्मक संरचनाओं पर जिन्हें वे नहीं समझते हैं, ध्यान देते हैं। इसका मतलब यह है कि वे जो कुछ पढ़ रहे हैं उसके समग्र अर्थ पर ध्यान नहीं देते हैं: उदाहरण के लिए, कहानी की घटनाएं या लेखक के तर्क।

यह इकाई आपके छात्र–छात्राओं की जो कुछ वे अंग्रेजी में पढ़ रहे हैं उसके अर्थ को समझने में मदद करने के बारे में है, खास तौर पर उनकी पाठ्यपुस्तकों के पाठ। यह कुछ ऐसी तकनीकों का वर्णन करती है जिनका उपयोग आप अपने छात्र–छात्राओं की जो कुछ वे अंग्रेजी में पढ़ रहे हैं उसे समझने में मदद करने के लिए कर सकते हैं। यह आपको दिखाती है कि कुछ ऐसी गतिविधियाँ कैसे की जायं जिन्हें छात्र–छात्रा पाठ को पढ़ने से पहले, के दौरान और बाद में कर सकते हैं, ताकि जो कुछ वे पढ़ रहे हैं उसके अर्थ पर ध्यान देने में उन्हें सहायता मिल सके। इकाई के अंत में, आप इन सभी तकनीकों का उपयोग करते हुए पाठ पढ़ाने के लिए एक पाठ योजना पाएंगे।

आप इस इकाई में सीख सकते हैं

- छात्र–छात्राओं को पाठ पढ़ने के लिए तैयार कैसे करें ताकि वे उसे बेहतर रूप से समझ सकें।
- छात्र–छात्राओं को पाठ पढ़ते समय समझने में किस प्रकार मदद करें।
- पढ़ने के बाद उनकी समझ की जाँच किस प्रकार करें।

1 छात्र–छात्राओं को पढ़ने के लिए तैयार करना

कई शिक्षक/शिक्षिका नए पाठ को पढ़ाते समय अनुवाद का उपयोग करते हैं, क्योंकि इससे छात्र–छात्राओं को अलग–अलग शब्दों को समझने में मदद मिल सकती है। तथापि, हर समय अनुवादों का उपयोग करने से कुछ हानियाँ होती हैं:

- यदि आप हमेशा अनुवाद और स्पष्टीकरण का उपयोग करते हैं, तो छात्र–छात्रा उतनी अंग्रेजी नहीं सुनते हैं जितनी उन्हें सुननी चाहिए। आपके छात्र–छात्रा कक्षा में जितनी अधिक अंग्रेजी सुनेंगे, वे उसे उतना ही बेहतर समझ कर उसका उपयोग कर सकेंगे (देखें इकाई *अपनी कक्षा में अधिक अंग्रेजी का उपयोग करना*)।
- अधिकांश भाषाओं में कई शब्दों और वाक्यांशों के सीधे अनुवाद अक्सर उपलब्ध नहीं होते हैं। यदि छात्र–छात्रा अंग्रेजी का उपयोग करके अंग्रेजी सीखते हैं, तो उनके अंग्रेजी में सोचने और भाषा को अधिक प्रभावी ढंग से अनुभव करने और उसका उपयोग करने की अधिक संभावना होगी।
- अनुवाद और स्पष्टीकरण अपने पाठों के अर्थों को स्वयं मालूम करने में छात्र–छात्राओं की मदद नहीं करते हैं (देखें इकाई *शब्दावली के अध्यापन के लिए कार्यनीतियाँ*)। यदि उनके लिए हर शब्द का अनुवाद किया जाय, तो उन्हें कक्षा के बाहर या भविष्य में अंग्रेजी पढ़ने की जरूरत पड़ने पर कठिनाई हो सकती है।

ज़रा सोचिए

आपने अपने छात्र–छात्राओं को जो आखिरी पाठ पढ़ाया था उसके बारे में सोचें और इन प्रश्नों का उत्तर दें।

- पाठ में किस प्रकार की पठन–सामग्री थी? उदाहरण के लिए, क्या वह गद्य, कहानी या कविता थी?
- क्या आपने छात्र–छात्राओं को वह पठन–सामग्री ऊँची आवाज में पढ़कर सुनाई थी?
- आपके छात्र–छात्राओं ने पठन–सामग्री को कितनी अच्छी तरह से समझा?
- क्या आपने उसका अनुवाद छात्र–छात्राओं की स्थानीय भाषा में किया?
- क्या आपने उसका अर्थ छात्र–छात्राओं की स्थानीय भाषा में समझाया?

जो कुछ वे पढ़ते हैं उसे समझने में आपके छात्र–छात्राओं की सहायता करने के लिए अन्य तकनीकों (कुछ अनुवाद और स्पष्टीकरण के साथ) का उपयोग करना आपके लिए अच्छा है।

छात्र–छात्राओं को अपनी पाठ्यपुस्तकों में कई पाठ पढ़ने हैं। इनमें से कई पाठ कठिन हैं, और उनमें जटिल शब्दावली और व्याकरणात्मक संरचनाएं हैं। कभी–कभी पाठों के विषय या थीमें भी कठिन होती हैं, जिनमें बहुत समय पहले हुई घटनाओं की चर्चा होती है, या वे ऐसे स्थानों में होती हैं जहाँ छात्रछात्रा न तो कभी गए हैं या जिनका उन्होंने नाम तक नहीं सुना है।

छात्र–छात्रा जो कुछ उन्हें पढ़ना है उसे और पाठ की भाषा को तब बेहतर समझ पाएंगे जब आप उन्हें पढ़ने के लिए तैयार करेंगे। आप ऐसा छात्र–छात्राओं के पढ़ना शुरू करने से पहले पाठ के कुछ शब्दों, वाक्यांशों और व्याकरणात्मक संरचनाओं को पढ़ाकर, या पाठ को पढ़ने से पहले अध्याय के विषयों या थीमों की चर्चा करके आप ऐसा कर सकते हैं।

गतिविधि 1: सत्रहवीं सदी की एक कविता, 'The Perfect Life' को पढ़ाने के तरीके की योजना बनाना करना

यह आपके करने एवं योजना बनाने संबंधी गतिविधि है।

कक्षा 10 के लिए इस कविता को पढ़ें। इसका नाम 'The Perfect Life' है और इसे Ben Jonson ने लिखा था।

It is not growing like a tree
In bulk doth make man better be;
Or standing long an oak, three hundred year,
To fall a log at last, dry, bald, and sere:
A lily of a day
Is fairer far in May,
Although it fall and die that night—
It was the plant and flower of light.
In small proportions we just beauties see;
And in short measures life may perfect be.

जब आप इसे पढ़ लें, तब इन प्रश्नों का उत्तर दें। हो सके तो अपने किसी सहकर्मी के साथ उन पर चर्चा करें:

- इस कविता की भाषा कक्षा 10 के छात्र–छात्राओं के लिए काफी कठिन है। इससे पहले कि वे कविता को पढ़ें आप उन्हें भाषा के लिए कैसे तैयार करेंगे?
- इस कविता को सत्रहवीं शताब्दी में एक अंग्रेज कवि ने लिखा था। आप इक्कीसवीं सदी के भारतीय छात्र–छात्राओं को कविता की थीमों के लिए कैसे तैयार करेंगे?

अब इस कविता को पढ़ाने के ढंग के बारे में कुछ शिक्षकों के विचार पढ़ें, और उनकी तुलना अपने स्वयं के विचारों से

मैं कविता के शीर्षक को बोर्ड पर लिखूँगा, और छात्र–छात्राओं से अंदाजा लगाने को कहूँगा कि कविता में क्या है।

करें। आपने जो कोई विचार सोचें हैं उन्हें नीचे खाली बुलबुले में जोड़ें।

मैंने अपने छात्र–छात्राओं को यह कविता पढ़ाई। उनके द्वारा इसे पढ़ने से पहले, मैंने उनसे उन चीजों की एक सूची बनाने को कहा जिनसे जीवन परिपूर्ण बन सकता है। फिर हमने उनके विचारों पर चर्चा की और सबसे आम विचारों को बोर्ड पर लिखा।

मैंने कुछ सबसे कठिन शब्द बोर्ड पर लिखे, और छात्र–छात्राओं से पूछा कि क्या वे उनका अर्थ जानते हैं। मैंने उन्हें वे शब्द पढ़ाए जिन्हें वे नहीं जानते थे ताकि कविता को पढ़ना अधिक आसान हो जाय।

मैंने इस कविता का अध्ययन करती एक कक्षा का अवलोकन किया। छात्र–छात्राओं के कविता को पढ़ने से पहले, शिक्षक/शिक्षिका ने उन्हें एक शाहबलूत के वृक्ष और कमल के फूल का चित्र दिखाया, और उन्होंने उनके बीच की भिन्नताओं के बारे में बातचीत की।

आपके विचार:

वे गतिविधियाँ जिनमें आप अपने छात्र–छात्राओं को कुछ पढ़ने से पहले तैयार करते हैं अक्सर पठन–पूर्व गतिविधियाँ कहलाती हैं। पाठ किस बारे में होगा इस विषय में सोचने में वे छात्र–छात्राओं की सहायता करती हैं, जिससे उन्हें पाठ को बेहतर ढंग से समझने में भी मदद मिलती है।

केस स्टडी 1: सुश्री सुनीता अपनी कक्षा के साथ एक पठन–पूर्व गतिविधि करती हैं

सुश्री सुनीता कक्षा 10 को अंग्रेजी पढ़ाती हैं। उन्हें अपने छात्र–छात्राओं को Ben Jonson's कविता The Perfect Life'

पढ़ानी थी। उन्हें पता था कि पाठ कठिन है, और उन्होंने सोचा कि यदि वे अपनी कक्षा को कविता पढ़ने से पहले तैयार करेंगी तो वे उसे बेहतर ढंग से समझेंगे और याद रखेंगे।

कविता पढ़ाने से पहले, मैंने बोर्ड पर उसका शीर्षक लिखाः 'The Perfect Life'. मैंने अपने छात्र–छात्राओं से शीर्षक का हिंदी में अनुवाद करने को कहकर जाँच की कि वे इसका अर्थ समझ सकते हैं। फिर मैंने उनसे पूछाः ''What makes a perfect life?'

शुरू में किसी ने भी कोई सुझाव नहीं दिया, इसलिए मैंने उन्हें एक उदाहरण दियाः 'The perfect life for me would be to do no cooking!' छात्र–छात्रा हँसने लगे, और उनमें से एक या दो में सुझाव देने का आत्मविश्वास जागा। इससे अन्य छात्र–छात्राओं को भी विचार आए, और मैंने उनमें से पाँच या छह को बोर्ड पर लिखा।

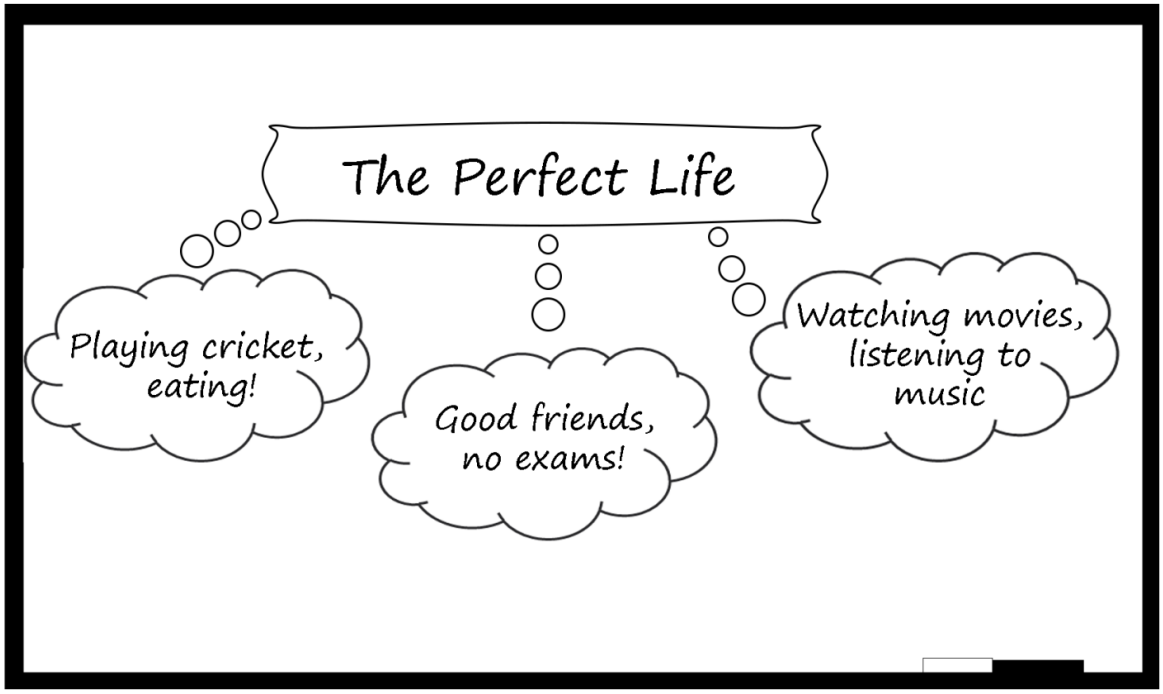

फिर मैंने हर एक को जोड़ियों में बैठाया। मैंने ऐसा हर दूसरी बेंच पर बैठे छात्र–छात्राओं से पीछे घूमने को, और जो व्यक्ति अब उनके सामने था उसके साथ काम करने को कहकर किया। मैंने उनसे कहाः

> Write a list of the things that make a perfect life. Try to write in English if you can, as with the answers on the board. You have three minutes to write your lists.

जब मेरे छात्र–छात्रा लिख रहे थे, तब मैंने कक्षा में घूमते हुए सुनिश्चित किया कि वे गतिविधि कर रहे हैं और यदि किसी को शब्दावली के साथ मदद की जरूरत हो तो प्रदान की जा सके।

कुछ मिनटों के बाद मैंने हर एक से लिखना बंद करने को कहा और बोर्ड पर निम्नलिखित वाक्य लिखाः 'The perfect life is like a …'

मैंने बोर्ड पर लिखा वाक्य पढ़कर सुनाया, और छात्र–छात्राओं से किसी प्राकृतिक वस्तु का उपयोग करते हुए वाक्य को पूरा करने को कहा, और उन्हें एक उदाहरण दियाः 'The perfect life is like a hotel.' This is because you don't have to cook when you stay at a hotel!

फिर मैंने उनसे जोड़ी में कार्य से, उनके सुझावों के लिए कारणों के साथ, कुछ विचार देने को कहा। अधिकांश छात्र–छात्राओं के लिए अंग्रेजी में कारण देना कठिन था, इसलिए मैंने जानना चाहा कि क्या अन्य छात्र–छात्रा सही

शब्दों की खोज करने में उनकी मदद कर सकते हैं। यदि वे भी अंग्रेजी में नहीं समझा सकते थे, तो मैंने उनसे अपनी स्थानीय भाषा का उपयोग करने को कहा। मेरे लिए महत्वपूर्ण यह था कि छात्र–छात्रा विषय में दिलचस्पी लें, और कविता को पढ़ने के लिए उत्सुक रहें।

इसके बाद, मैंने अपनी कक्षा को बताया कि हम 'The Perfect Life' शीर्षक वाली एक कविता पढ़ने जा रहे हैं। मैंने उनसे कहा कि मैं कविता को ऊँची आवाज में पढ़कर सुनाने जा रही हूँ, और वे उसे सुनेंगे और अपनी किताब में उसके देखते भी रहेंगे। मैंने समझाया कि कविता में, कवि जीवन की तुलना प्राकृतिक वस्तुओं से करता है। मैंने उनसे उनके कविता को पढ़ते और सुनते समय वे नोट करें कि वे प्राकृतिक वस्तुएं क्या थीं। मैंने ऐसा इसलिए किया ताकि उनके पास पाठ को पढ़ने के लिए कोई कारण रहे। मैंने फिर कविता को बिना अनुवाद किए या समझाए, ऊँची आवाज में पढ़ा।

फिर मैंने कक्षा से कुछ प्रश्न पूछे:

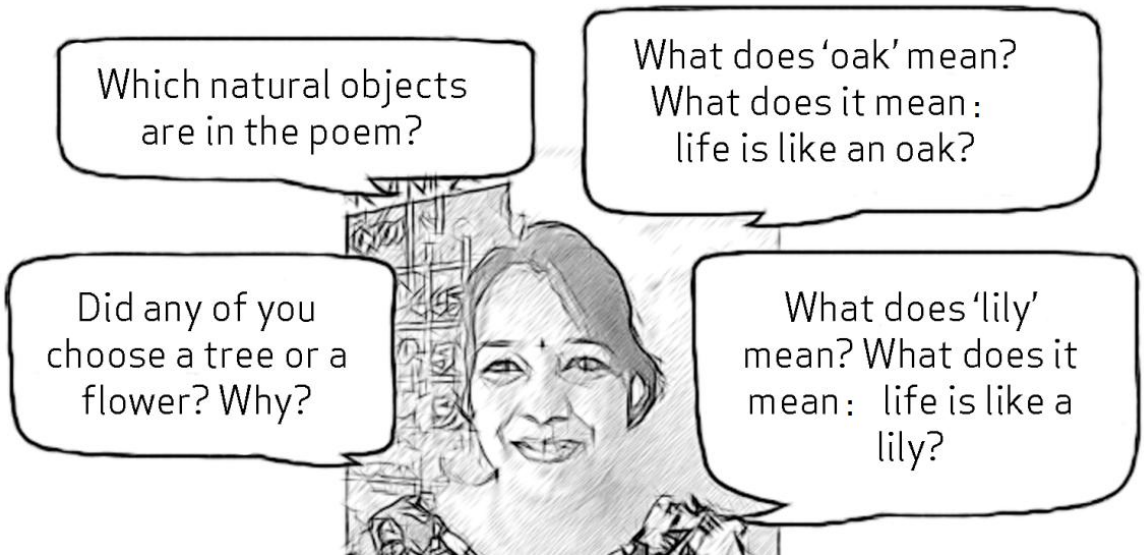

इस गतिविधि ने कविता को समझने में हर एक की मदद की। इसके बाद, कविता पर चर्चा करना अधिक आसान था, और छात्र–छात्राओं ने कविता को बेहतर तरह से याद भी किया।

	अंग्रेजी पाठ्यपुस्तक Panorama part I, class IX , और Panorama part II, class X में दी गई कविताओं को पढाने में इस तरीके को अपना कर देखें।

गतिविधि 2: कक्षा में आजमाएं – छात्र–छात्राओं को पढ़ने के लिए तैयार करना

कोई पाठ या अन्य अंग्रेजी पठन–सामग्री पढ़ने के पहले छात्र–छात्राओं को तैयार करना हमेशा उपयोगी होता है (आप छात्र–छात्राओं को किसी सुनने की गतिविधि के लिए भी इसी तरह से तैयार कर सकते हैं – देखें इकाई *अंग्रेजी सुनने में अपने छात्र–छात्राओं की सहायता करना*।) निम्नलिखित चरणों का अनुसरण करें:

1. कोई ऐसा पाठ चुनें जिसे आपके छात्र–छात्राओं ने अब तक नहीं पढ़ा है (शायद पाठ्यपुस्तक का अगला वाला)। यह किसी भी तरह के पाठ का अंश हो सकता है – गद्य, पद्य, नाटक या अखबार या रिपोर्ट।
2. कक्षा के सामने, अंश को पढ़ें। कोई पठन–पूर्व गतिविधि नोट करें जिसे आप अपने छात्र–छात्राओं से पाठ को पढ़ने से पहले करवाना चाहते हैं। यहाँ पठन–पूर्व गतिविधियों के कुछ उदाहरण दिए गए हैं:
   - शीर्षक को बोर्ड पर लिखें, और छात्र–छात्राओं से अंदाजा लगाने को कहें कि पाठ किस बारे में है

- उन्हें मुख्य विषय पर चर्चा करने को कहें (उदाहरण के लिए, यदि विषय घरेलू कामकाज के बारे में है, तो आप उनसे इस बात पर चर्चा करने को कह सकते हैं कि घर में कौन क्या करता है)
- पठन–सामग्री में से कुछ कठिन शब्द और वाक्यांश पढ़ाएं
- पाठ में से कुछ शब्दों और वाक्यांशों को बोर्ड पर लिखें और छात्र–छात्राओं से उनका प्रयोग वाक्यों में करने को कहें।

3. कक्षा में, यह गतिविधि अपने छात्र–छात्राओं के साथ करें। यदि छात्र–छात्रा अपनी स्थानीय भाषा का उपयोग करते हैं, तो वे महत्वपूर्ण शब्द और वाक्यांश खोजने में उनकी सहायता करें जिनकी उन्हें अंग्रेजी में जरूरत पड़ती है। इससे उन्हें पाठ या अंश को बेहतर ढंग से समझने में तब भी मदद मिलेगी।

ज़रा सोचिए

यहाँ इस गतिविधि को आजमाने के बाद आपके विचार करने के लिए कुछ प्रश्न दिए गए हैं। यदि संभव हो, तो इन प्रश्नों की चर्चा किसी सहकर्मी के साथ करें।

- कक्षा में पठन–पूर्व गतिविधि करने में कितना समय लगा?
- क्या आपके छात्र–छात्रा गतिविधि में दिलचस्पी लेते दिखाई दिए? क्या ऐसे भी छात्र–छात्रा थे जिन्हें दिलचस्पी नहीं थी? आप ऐसा क्यों सोचते हैं?
- क्या इस पठन–पूर्व गतिविधि ने पाठ को समझने में उनकी मदद की?

आप सोच सकते हैं कि पठन–पूर्व गतिविधियाँ बहुत ज्यादा समय ले लेती हैं, और पाठ बस शुरू कर देना अधिक शीघ्र कार्य है। लेकिन इस तरह की गतिविधियों का अधिक समय लेना जरूरी नहीं है – पाँच या दस मिनट भी छात्र–छात्राओं को पढ़ने के लिए तैयार करने के लिए मददगार हो सकते हैं।

उम्मीद है कि ये गतिविधियाँ आपके छात्र–छात्राओं की दिलचस्पी को बढ़ाएंगी और पाठों को बेहतर ढंग से समझने में उनकी सहायता करेंगी। नोट करें कि कौन से छात्र–छात्रा समझते लग रहे हैं और कौन नहीं, ताकि आप उन लोगों की आगे सहायता कर सकें जिन्हें समझने में अब भी कठिनाई हो रही है। छात्र–छात्राओं के पढ़ने से पहले विभिन्न गतिविधियों को आजमाएं और देखें कि कौन सी गतिविधियाँ अधिक प्रभावी हैं।

2 पाठ को पढ़ते समय उसे समझने में छात्र–छात्राओं की मदद करना

छात्र–छात्राओं को पठन–पूर्व गतिविधि देने से जो कुछ वे पढ़ने जा रहे हैं उसके लिए तैयार होने में उन्हें मदद मिलती है। छात्र–छात्राओं को अपने आप मौन होकर पढ़ने के लिए समय देना (चित्र 1) उन्हें उनके पठन को समझने – और उसका आनंद लेने – में भी मदद कर सकता है। निम्नलिखित में, आप वे गतिविधियाँ देखेंगे जो आप अपने छात्र–छात्राओं को उनके मौन होकर पढ़ते समय दे सकते हैं ताकि वे समझ सकें कि वे क्या पढ़ रहे हैं।

चित्र 1 एक छात्रा मौन होकर पढ़ते हुए।

अपने छात्र–छात्राओं के मौन होकर पढ़ते समय उनकी यह समझने में मदद करने के लिए कि वे क्या पढ़ रहे हैं, उन्हें उनके पठन के लिए कुछ संकेंद्रन देना महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए प्रश्नों के उत्तरों की तलाश करना आपके छात्र–छात्राओं को पाठ को पढ़ने के लिए एक उद्देश्य देता है और वे जो कुछ पढ़ रहे हैं उस पर ध्यान लगने में मदद करता है।

आपके छात्र–छात्राओं को पढ़ते समय उत्तर देने के लिए प्रश्न देने से भी आपको इस बात का आकलन करने में मदद मिलेगी कि छात्र–छात्राओं ने कितना समझा है। छात्र–छात्रा अलग अलग स्पीड से पढ़ेंगे, और अलग अलग बातें समझेंगे। जब आपके छात्र–छात्रा पढ़ रहे हों तब कमरे में घूमें। नोट करें कि किन छात्र–छात्राओं को प्रश्नों का उत्तर देने में समस्या हो रही है और किन छात्र–छात्राओं को गतिविधि आसान लग रही है।

वीडियोः अनुश्रवण करना और फीडबैक (प्रतिपुष्टि) देना

गतिविधि 3: कक्षा में आजमाएं – पाठ को पढ़ते समय उसे समझने में अपने छात्र–छात्राओं की मदद करने के लिए मौन पठन का उपयोग करना

अपनी कक्षा में मौन पठन आजमाने के लिए इन चरणों का अनुसरण करें:

1. ऐसा कोई पाठ चुनें जिसे आपके छात्र–छात्राओं ने अब तक नहीं पढ़ा है (शायद पाठ्यपुस्तक का अगला अध्याय)। वह किसी भी तरह का पाठ हो सकता है – गद्य, पद्य, नाटक या अखबार या रिपोर्ट। यह वही पठन–सामग्री हो सकती है जिसका उपयोग आपने गतिविधि 1 में किया था।
2. कक्षा के सामने, पाठ को पढ़ें। ऐसे चार या पाँच प्रश्न सोचें जो आप इसके बारे में पूछ सकते हैं। यदि यह लंबा पाठ है, तो इसके एक खंड के बारे में पूछे जा सकने वाले प्रश्न सोचें। सुनिश्चित करें कि प्रश्न पाठ के

मतलब और उसमें जो कुछ होता है उसके बारे में हैं (उदाहरण के लिए, 'What advice does the writer give?'), उसमें प्रयुक्त भाषा के बारे में नहीं (उदाहरण के लिए, 'What does "doth" mean?')। पाठ (एक पत्र) के उदाहरण और उसके मतलब के बारे में आपके द्वारा पूछे जा सकने वाले कुछ प्रश्नों के लिए संसाधन 1 देखें। प्रश्न पूछने के बारे में आप इकाई *समग्र–कक्षा पठन दिनचर्याएं* में अधिक जानकारी पा सकते हैं।

3. कक्षा में, छात्र–छात्राओं को पाठ के बारे में अपने प्रश्न दें। आप इन प्रश्नों को बोर्ड पर लिख सकते हैं, या उन्हें लिखवा सकते हैं। ऐसा छात्र–छात्राओं के पाठ को पढ़ने से *पहले* करें।
4. छात्र–छात्राओं से अध्याय या पाठ को पढ़ने केलिए कहें। यदि उसमें दो या तीन अनुच्छेद हैं, तो उनसे उसका केवल एक भाग पढ़ने को कहें। छात्र–छात्राओं से मौन होकर पढ़ने और प्रश्नों के उत्तर खोजने को कहें। उन्हें बताएं कि हर शब्द को समझना महत्वपूर्ण नहीं है। उन्हें एक समय सीमा दें। छात्र–छात्राओं के पढ़ते समय, कमरे में चहलकदमी करते हुए जाँच करें कि हर कोई पढ़ रहा है औरयदि कोई समस्या या प्रश्न हो तो उसका समाधान करें।
5. जब समय सीमा समाप्त हो जाए, तब छात्र–छात्राओं से प्रश्नों का उत्तर देने को कहें। आप संपूर्ण कक्षा से जवाब मांग सकते हैं, या वे अपने उत्तरों की तुलना करने के लिए जोड़ियों में काम कर सकते हैं। यदि उन्हें अपनी बात अंग्रेजी में कहने में कठिनाई हो रही हो तो वे अपनी स्थानीय भाषा का उपयोग कर सकते हैं। यदि उन्हें स्वयं को व्यक्त करने में कठिनाई हो रही हो – तो उनकी सहायता करने का प्रयास करें – या उनसे एक दूसरे की मदद करवाएं। स्वयं प्रश्नों का उत्तर देने के लोभ को काबू में रखें। धीरज रखें और छात्र–छात्राओं को उत्तर देने दें।
6. अपने छात्र–छात्राओं से पूछें कि उन्होंने पाठ से और क्या सीखा है या उसमें क्या दिलचस्प पाया है, और उनसे उसके कारण बताने को कहें।
7. इस गतिविधि के बाद, या अगली कक्षा में, यदि आपको लगे कि छात्र–छात्राओं ने पाठ को ठीक से नहीं समझा है तो आप आगे बढ़ते हुए पाठ को और उसमें प्रयुक्त भाषा को अधिक विस्तार से देख सकते हैं।

ज़रा सोचिए

यहाँ इस गतिविधि को आजमाने के बाद आपके विचार करने के लिए कुछ प्रश्न दिए गए हैं। यदि संभव हो, तो इन प्रश्नों की चर्चा किसी सहकर्मी के साथ करें।

- क्या छात्र–छात्राओं के मौन पठन गतिविधि करते समय उनको समय सीमा देने से उनके पठन को संकेंद्रित करने में सहायता मिली?
- आपके विचार से आपके अनुवाद या स्पष्ट किए बगैर छात्र–छात्राओं को कितना समझ में आया?

समय सीमाएं महत्वपूर्ण होती हैं क्योंकि कुछ छात्र–छात्रा अन्य लोगों से अधिक तेजी से पढ़ेंगे, और कुछ अन्य लोगों से अधिक समझेंगे। जो भी हो, आपके द्वारा तय की गई समय सीमा में सभी छात्र–छात्रा पाठ का कम से कम कुछ भाग पढ़ने में समर्थ होंगे, और उन्हें सामग्री का कुछ भाग तो समझ में आएगा। यदि कुछ छात्र–छात्रा अन्य लोगों से पहले समाप्त कर लेते हैं, तो वे पाठ या पाठ के एक खंड को फिर से पढ़ सकते हैं।

जब वे मौन होकर पढ़ते हैं, तब आपके छात्र–छात्रा हर शब्द नहीं समझेंगे। उन्हें ऐसा करने की जरूरत नहीं है, और जब वे पहली बार कोई चीज पढ़ते हैं तो यह बिल्कुल सामान्य बात है। महत्वपूर्ण यह है कि वे सबसे आवश्यक जानकारी, या पाठ के संदेश को समझें। जो प्रश्न आप उनसे पूछते हैं उन्हें उस संदेश को खोजने में उनकी मदद करनी चाहिए। अभ्यास से, छात्र–छात्रा अपने बलबूते पर बेहतर ढंग से पढ़ने लगेंगे।

अधिकांश लोगों के लिए, मौन होकर पढ़ते समय पाठ का आनंद लेना और उसे समझना अधिक आसान होता है। अंग्रेजी कक्षा में, छात्र–छात्राओं से अक्सर पाठों को ऊँची आवाज में पढ़ने को कहा जाता है – या शिक्षक/शिक्षिका अपने

छात्र–छात्राओं को ऊँची आवाज में पाठ पढ़कर सुनाते हैं। ऊँची आवाज में पढ़ना एक उपयोगी तकनीक हो सकती है। तथापि, उसे हर समय करने से स्वतंत्र रूप से पढ़ना सीखने की छात्र–छात्राओं की प्रगति में बाधा पड़ सकती है।

3 पाठ को पढ़ने के बाद उसकी समझ की जाँच करना

पाठ को पढ़ने के बाद, छात्र–छात्राओं को सबसे महत्वपूर्ण बात, या लेखकके सबसे महत्वपूर्ण संदेष की संभवतः कुछ समझ हुई। उन्हें शब्दावली और भाषा की भी थोड़ी–बहुत समझ हुई होगी। पाठ के पढ़ने के बाद, आपको जाँचना चाहिए कि छात्र–छात्राओं ने कितना समझा है।

जिन गतिविधियों का उपयोग आप छात्र–छात्राओं की समझ की जाँच करने के लिए कर सकते हैं, उनमें निम्नलिखित शामिल हैं:

- **बोध–संबंधी प्रश्नः** आप इन्हें पाठ्यपुस्तक में पा सकते हैं, या आप स्वयं अपने बना सकते हैं। उन्हें बोर्ड पर लिखें या उन्हें अपने छात्र–छात्राओं को लिखवाएं। एक विकल्प है पाठ को पढ़ने के बाद छात्र–छात्राओं से समूहों में स्वयं अपने बोध–संबंधी प्रश्न लिखने को कहना। समूह प्रश्नों का आदान–प्रदान करते हैं और एक दूसरे के प्रश्नों का उत्तर देते हैं (देखें इकाई *समग्र–कक्षा पठन दिनचर्याएं*)।
- **चर्चाएं और सारांशः** छात्र–छात्राओं ने पाठ के बारे में जो कुछ समझा है समूहों में उस पर चर्चा करते हैं। वे जो कुछ हुआ उसका सारांश, या पाठ की सबसे महत्वपूर्ण बातें लिख सकते हैं।
- **व्याकरण और शब्दावली विकासः** पाठ्यपुस्तकों के अध्यायों में शब्दावली और व्याकरणात्मक संरचनाओं के उदाहरण होते हैं जिन्हें छात्र–छात्रा सीख और उपयोग में ला सकते हैं (देखें इकाई *व्यावहारिक अंग्रेजी व्याकरण*)। अध्याय को पढ़ने के बाद, ऐसी गतिविधियाँ करें जिनमें आपके छात्र–छात्रा इनमें से कुछ शब्दों या संरचनाओं का उपयोग कर सकें। उदाहरण के लिए, उन्हें अध्याय के लिए किसी नई शब्दावली का उपयोग करते हुए कुछ वाक्य या अनुच्छेद लिखने को कहें।

वे गतिविधियाँ, जिनमें आप छात्र–छात्राओं की पाठ के बारे में समझ की जाँच करते है, या उन्हें किसी अंश की भाषा का उपयोग करने को प्रोत्साहित करते हैं, पठन–पश्चात् (post reading) गतिविधियाँ कहलाती हैं। वे आप और आपके छात्र–छात्राओं को यह देखने में मदद करती हैं कि उन्होंने कितना समझा है। साथ ही वे नई भाषा सीखने में छात्र–छात्राओं की मदद करती हैं।

गतिविधि 4: पठन–पश्चात् (Post Reading) गतिविधि का नियोजन और निष्पादन करना

उस पाठ का उपयोग करने वाले पाठ के बारे में सोचें जो आप अगले सप्ताह पढ़ाने जा रहे हैं। पठन–पश्च गतिविधियों के लिए विचारों को देखें और निश्चय करें कि आप अपनी कक्षा के लिए किन का उपयोग करेंगे। पाठों की योजना के बारे में अधिक जानकारी के लिए, देखें संसाधन 2।

पठन–पश्च गतिविधि का उपयोग करते हुए पाठ का नियोजन और निष्पादन करें। जब छात्र पठन–पश्च गतिविधियाँ कर रहे हों, कमरे में घूमकर जाँचें कि उन्होंने क्या समझा है, और इसका उपयोग पठन में छात्र–छात्राओं की प्रगति के अपने आकलन के भाग के रूप में करें।

क्या इस गतिविधि ने छात्र–छात्राओं की समझ का आकलन करने में आपकी सहायता की? अपने आकलन का उपयोग आप अपने अगले पाठ की योजना बनाने के लिए कैसे करेंगे? आकलन पर अधिक जानकारी के लिए, संसाधन 3 देखें।

वीडियोः सीखने की योजना बनाना

वीडियो: प्रगति और कार्यप्रदर्शन का आकलन करना

4 तकनीकों का संयोजन करना

अब केस स्टडी 2 पढ़ें।

केस स्टडी 2: श्रीमती सुनीता भारत के बच्चों नाम नेहरू के पत्र पर एक मंथन सत्र संचालित कर रही हैं

श्रीमती सुनीता ने इस इकाई की तकनीकों का उपयोग कक्षा 9 को एक अंश पढ़ाने के लिए किया। उन्होंने कक्षा को पठन–पूर्व गतिविधि के लिए तैयार किया और फिर छात्र–छात्राओं के पठन को पूरा कर लेने के बाद अंश के विषय से संबंधित भाषा का अभ्यास करने के लिए कुछ गतिविधियाँ कीं।

पिछले सप्ताह, मैं Nehru's 'A letter to the children of India' with Class IX पढ़ा रही थी [संसाधन 1 देखें]। मेरे छात्र–छात्राओं द्वारा पाठ को पढ़ने से पहले, मैंने बोर्ड पर शीर्षक लिखा, और समझाया कि पत्र किस बारे में है। मैंने उन्हें बताया कि वह एक वृद्ध आदमी द्वारा लिखा गया था जो युवा पीढ़ी को कुछ सलाह दे रहे थे।

मैंने अपने छात्र–छात्राओं से कुछ सलाह सोचने के लिए कहा जो वे भारत के बच्चों को देंगे। एक–दो छात्र–छात्राओं ने कुछ सुझाव दिए, जैसे 'You should visit Delhi!' और 'You should learn about technology!' तब मैंने उनसे जोड़ियों में काम करने, और उन पाँच सलाहों को लिखने को कहा जो वे देंगे। मैंने उनसे वाक्यों को अंग्रेजी में लिखने को कहा। मुझे उन गलतियों की चिंता नहीं थी जो छात्र–छात्राओं के लिखते समय हो रही थीं। मैं तो बस उनसे कुछ विचार चाहती थी। तीन मिनट बाद, मैंने गतिविधि को समाप्त कर दिया, और तीन या चार जोड़ियों से उन्होंने जो कुछ लिखा था उसके कुछ उदाहरण पढ़कर सुनाने को कहा।

फिर मैंने कक्षा से नेहरूजी के पत्र को मौन रहकर पढ़ने को कहा। मैंने उनसे पढ़ते समय उस सलाह को रेखांकित करने को कहा जो उन्होंने अपने पत्र में दी थी। मैंने उन्हें पढ़ने और सलाह को खोजने के लिए दस मिनट की समय सीमा दी। जब वे पढ़ रहे थे, मैंने कमरे में घूमकर सुनिश्चित किया कि हर एक ने समझ लिया है कि उन्हें क्या करना है। मैंने देखा कि रानी पत्र में कुछ भी रेखांकित नहीं कर रही थी। उसको समझ में नहीं आया था कि उसे सलाह की तलाश करनी है, इसलिए मैंने उसे समझाया और कुछ खोजने में उसकी मदद की। तब वह अपने आप यह काम करने लगी।

जब समय खत्म हो गया, तब मैंने अपने छात्र–छात्राओं से कहा कि वे अपने बगल में बैठे सहपाठी के साथ उनको मिली सलाह की तुलना करें। मैंने उनसे यह भी चर्चा करने को कहा कि वह सलाह उस सलाह के कितने समान या उससे कितनी भिन्न थी जो उन्होंने पत्र को पढ़ने से पहले लिखी थी। जब वे अपने विचारों की तुलना कर रहे थे, तब मैं कमरे में घूमती रही और वार्तालापों को सुना। यह स्पष्ट था कि कुछ छात्र–छात्राओं ने पत्र में दी गई सलाह समझ ली थी, जबकि कुछ छात्र–छात्राओं को कठिनाई हो रही थी। कुछ मिनटों बाद, मैंने कक्षा से बातचीत करना बंद करने को कहा। फिर हमने पत्र में दी गई सलाह पर एक समग्र कक्षा के रूप में चर्चा की, और मैंने ऐसे शब्दों को स्पष्ट किया जो दी गई सलाह को समझने से छात्र–छात्राओं को रोक रहे थे।

इसके बाद, मैंने बोर्ड पर ऐसे कुछ वाक्यांश लिखे जिनका उपयोग हम अंग्रेजी में सलाह देते समय कर सकते हैं:

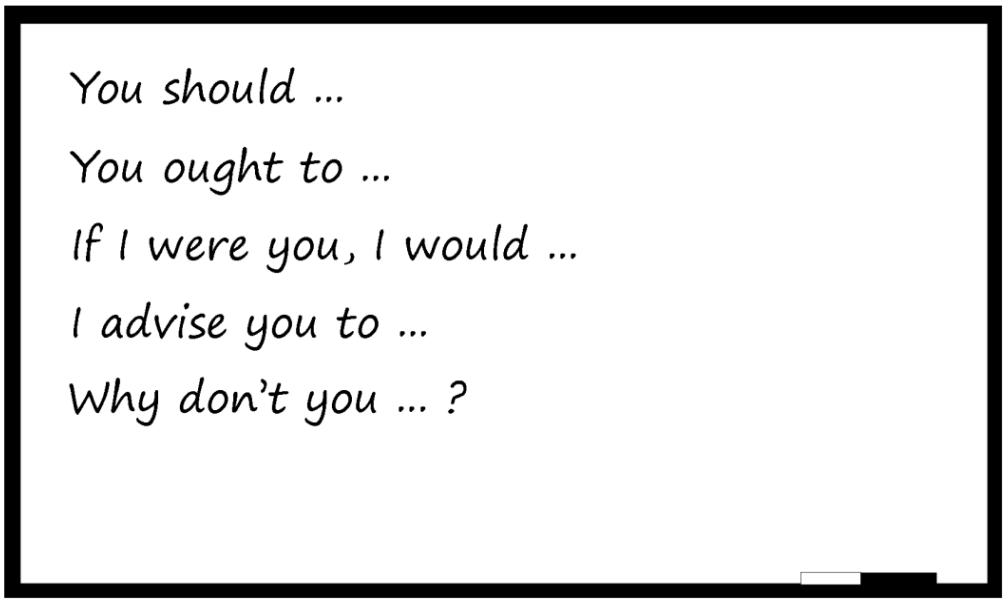

मैंने अपने छात्र–छात्राओं से यह कल्पना करने को कहा कि वे नेहरूजी की तरह बूढ़े दादा और दादी हैं, और अपने पोते–पोतियों के साथ बात कर रहे हैं। उनमें से कुछ को यह काफी मज़ेदार लगा और उन्हें यह विचार पसंद आया! मैंने उनसे ऐसी कुछ सलाह सोचने को कहा जो वे अपने पोते–पोतियों को दे सकते हैं। मैंने उन्हें एक उदाहरण दिया: 'You should work hard.' कुछ छात्र–छात्राओं ने कुछ और विचार दिए और मैंने उन्हें बोर्ड पर इस प्रकार लिख दिया:

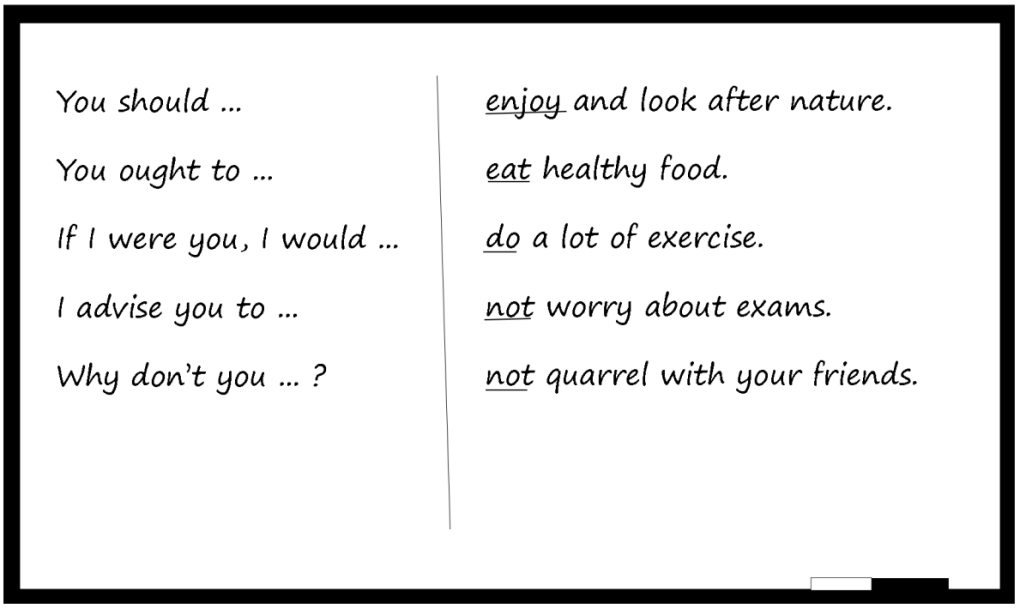

मैंने स्पष्ट किया कि छात्र किसी भी शुरूआत (बोर्ड के बायीं तरफ) को किसी भी समाप्ति (बोर्ड के दाहिने तरफ) के साथ उपयोग में ला सकते हैं। मैंने क्रियाओं ('enjoy', 'eat', 'do', 'be', 'avoid') को रेखांकित किया और समझाया कि उन्हें इन वाक्यांशों के बाद क्रियाओं के मूल (Infinitive) रूप का उपयोग करना चाहिए। फिर मैंने वाक्यों को ऊँची आवाज में पढ़ा, और छात्र–छात्राओं से उन्हें दोहराने को कहा ताकि वे अपने उच्चारण का अभ्यास कर सकें।

उसके बाद, मैंने छात्र–छात्राओं को जोड़ियों में संगठित किया, और उनसे कहा कि उनमें से एक दादा/दादी है, और दूसरा पोता/पोती। मैंने समझाया कि दादा/दादी द्वारा पोते/पोती को सलाह दी जानी चाहिए। जब वे तैयार हो गए, तो मैंने उन्हें भूमिकाओं का अभिनय करने के लिए दो या तीन मिनट दिए, और फिर उन्होंने अपनी भूमिकाएँ आपस में बदल लीं। जब मैं सुन रही थी, तब मैंने देखा कि कुछ जोड़ियाँ बोर्ड पर लिखी सलाह का उपयोग कर रही थीं,

जबकि अधिक आश्वस्त वक्ता नए वाक्यांश बोल रहे थे।

अंत में, मैंने छात्र–छात्राओं से, एक नियत कार्य के रूप में, 'A letter to the children of India' शीर्षक से अपना खुद का पत्र लिखने को कहा। मैंने उनसे उन कुछ वाक्यांशों का उपयोग करने को कहा जिनका उन्होंने अभी–अभी अभ्यास किया था, और यह कल्पना करने को कहा कि वह पत्र *टाइम्स ऑफ इंडिया* में प्रकाशित होगा। अगली कक्षा में मेरे पास कुछ बहुत रोचक पत्र पढ़ने के लिए उपलब्ध थे!

गतिविधि 5: कक्षा में आजमाएं – भारत के बच्चों के नाम एक पत्र

केस स्टडी 2 में, नेहरूजी के पत्र को पढ़ने से पहले, दौरान और पश्चात छात्र–छात्रा कई गतिविधियाँ करते हैं। इन गतिविधियों में सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना शामिल है। आप संसाधन 4 में शिक्षक की पाठ योजना पा सकते हैं। यह पाठ (या ऐसा ही कोई पाठ) अपने छात्र–छात्राओं को पढ़ाने के लिए आप इस पाठ योजना का उपयोग कर सकते हैं।

ज़रा सोचिए

यहाँ इस गतिविधि को आजमाने के बाद आपके विचार करने के लिए कुछ प्रश्न दिए गए हैं। यदि संभव हो, तो इन प्रश्नों की चर्चा किसी सहकर्मी के साथ करें।

- क्या आप सोचते हैं कि इस इकाई की तकनीकों ने पाठ को समझने में आपके छात्र–छात्राओं की सहायता की?
- क्या आपके छात्र–छात्राओं ने सलाह देने की भाषा का प्रभावी ढंग से उपयोग किया?

आपको हर बार कोई पाठ पढ़ाते समय सभी तकनीकों का उपयोग करने की जरूरत नहीं है। तथापि, आपसे जितना हो सके और जितनी बार हो सके उपयोग करना अच्छी बात है। आप इन तकनीकों का उपयोग पाठ्यपुस्तक के किसी भी पाठ, या किसी भी अन्य पाठ (उदाहरणः अखबार का कोई लेख) के साथ कर सकते हैं। किसी अन्य पाठ के साथ ऐसी ही योजना लिखें, और उसे अपने सहकर्मियों के साथ साझा करें।

5 सारांश

समझने के लिए पढ़ने में छात्र–छात्राओं की मदद करने के लिए, आप उन्हें पठन–पूर्व गतिविधियाँ दे सकते हैं। आप छात्र–छात्राओं को मौन होकर पढ़ने के लिए भी प्रोत्साहित कर सकते हैं, और उनके पढ़ते समय उन्हें कुछ करने को दे सकते हैं (जैसे प्रश्नों के उत्तर खोजना)। आप उन्हें समझ की जाँच करने, अध्याय से नई भाषा का अभ्यास करने या बोलने या लिखने जैसे भाषा संबंधी कौशल विकसित करने के लिए पठन–पश्च गतिविधियाँ दे सकते हैं। इन तकनीकों के संयोजन का उपयोग पाठ्यपुस्तक या और कहीं से भी लिए गए किसी भी पाठ के साथ किया जा सकता है।

यदि आप अपने स्वयं के पठन कौशलों को विकसित करने के बारे में अधिक जानना चाहते हैं, तो संसाधन 5 देखें, और यदि आप पठन पढ़ाने के बारे में अधिक सीखना चाहते हैं, तो अतिरिक्त संसाधन खंड देखें।

इस विषय पर अन्य माध्यमिक अंग्रेजी शिक्षक विकास इकाइयाँ ये हैं:

- *समग्र–कक्षा पठन दिनचर्याएं* आप इस इकाई में पठन के बारे में अधिक जान सकते हैं। इसमें अधिक तकनीकों और कार्यनीतियों पर चर्चा की गई है जिनका उपयोग छात्र अपने पठन कौशलों का विकास करने के लिए कर सकते हैं।

- *शब्दावली पढ़ाने के लिए कार्यनीतियाँ:* यह इकाई इस बात पर चर्चा करती है कि शिक्षक किसी पाठ के शब्दों से निपटने के लिए छात्र–छात्राओं की कैसे सहायता कर सकते हैं, और संदर्भ के शब्दों को पढ़ाने के लिए पाठों के उपयोग पर चर्चा करती है।
- *आमोद–प्रमोद के लिए पठन को प्रोत्साहित करना:* इस इकाई में आप अत्यंत विस्तृत रूप से पढ़ने में छात्र–छात्राओं की मदद करने की तकनीकों के बारे में जान सकते हैं।

संसाधन

संसाधन 1: भारत के बच्चों के नाम एक पत्र

Dear Children,

I like being with children and talking to them and, even more, playing with them. For the moment I forget that I am terribly old and it is very long ago since I was a child. But when I sit down to write, I cannot forget my age and the distance that separates you from me. Old people have a habit of delivering sermons and good advice to the young.

I remember that I disliked this very much long ago when I was a boy. So I suppose you do not like it very much either. Grown-ups also have a habit of appearing to be very wise, even though very few of them possess much wisdom. I have not yet quite made up my mind whether I am wise or not. Sometimes listening to others I feel that I must be wise and brilliant and important. Then, looking at myself, I begin to doubt this. In any event, people who are wise do not talk about their wisdom and do not behave as if they were very superior persons …

What then shall I write about? If you were with me, I would love to talk to you about this beautiful world of ours, about flowers, trees, birds, animals, stars, mountains, glaciers and all the other beautiful things that surround us in the world. We have all this beauty all around us and yet we, who are grown-ups, often forget about it and lose ourselves in our arguments or in our quarrels. We sit in our offices and imagine that we are doing very important work.

I hope you will be more sensible and open your eyes and ears to this beauty and life that surrounds you. Can you recognise the flowers by their names and the birds by their singing? How easy it is to make friends with them and with everything in nature, if you go to them affectionately and with friendship. You must have read many fairy tales and stories of long ago. But the world itself is the greatest fairy tale and story of adventure that was ever written. Only we must have eyes to see and ears to hear and a mind that opens out to the life and beauty of the world.

Grown-ups have a strange way of putting themselves in compartments and groups. They build barriers … of religion, caste, colour, party, nation, province, language, customs, and of rich and poor. Thus they live in prisons of their own making. Fortunately, children do not know much about these barriers, which separate. They play and work with each other and it is only when they grow up that they begin to learn about these barriers from their elders. I hope you will take a long time in growing up …

Some months ago, the children of Japan wrote to me and asked me to send them an elephant. I sent them a beautiful elephant on behalf of the children of India. … This noble

animal became a symbol of India to them and a link between them and the children of India. I was very happy that this gift of ours gave so much joy to so many children of Japan, and made them think of our country … remember that everywhere there are children like you going to school and work and play, and sometimes quarrelling but always making friends again. You can read about these countries in your books, and when you grow up many of you will visit them. Go there as friends and you will find friends to greet you.

You know we had a very great man amongst us. He was called Mahatma Gandhi. But we used to call him affectionately Bapuji. He was wise, but he did not show off his wisdom. He was simple and childlike in many ways and he loved children … he taught us to face the world cheerfully and with laughter.

Our country is a very big country and there is a great deal to be done by all of us. If each one of us does his or her little bit, then all this mounts up and the country prospers and goes ahead fast.

I have tried to talk to you in this letter as if you were sitting near me, and I have written more than I intended.

(Nehru, 1949)

कुछ प्रश्न जो आप पत्र के बारे में पूछ सकते हैं:

- Who is the writer of the letter? Who is he writing to?
- How old is the writer of the letter?
- What is the main purpose of the letter?
- How does the writer describe grown-ups?
- How are children different to grown-ups?
- What advice does the writer give?

संसाधन 2: सीखने की योजना बनाना

सीखने की योजना बनाना और उनकी तैयारी क्यों महत्वपूर्ण है

अच्छे सीखने की योजना बनानी होती है। नियोजन आपके पाठ को स्पष्ट और सुसामयिक बनाने में मदद करता है, जिसका अर्थ यह है कि आपके छात्र सक्रिय और आकृष्ट बने रह सकते हैं। प्रभावी योजना में कुछ अंतर्निहित लचीलापन भी शामिल होता है ताकि षिक्षक पढ़ाते समय अपने छात्र–छात्राओं की शिक्षण–प्रक्रिया के बारे में कुछ पता चलने पर उसके प्रति अनुक्रिया कर सकें। पाठों की श्रृंखला के लिए योजना पर काम करने में छात्र–छात्राओं और उनके पूर्व–शिक्षण को जानना, पाठ्यक्रम में से आगे बढ़ने के क्या अर्थ है, और छात्र–छात्राओं के पढ़ने में मदद करने के लिए सर्वोत्तम संसाधनों और गतिविधियों की खोज करना शामिल होता है।

योजना एक सतत प्रक्रिया है जो आपको अलग–अलग पाठों और साथ ही, एक के ऊपर एक विकसित होते पाठों की श्रृंखला, दोनों की तैयारी करने में मदद करती है। पाठ योजना के चरण ये हैं:

- अपने छात्र–छात्राओं की प्रगति के लिए आवश्यक बातों के बारे में स्पष्ट रहना
- तय करना कि आप कौन से ऐसे तरीके से पढ़ाने जा रहे हैं जिसे छात्र समझेंगे और आपको जो पता लगेगा उसके प्रति अनुक्रिया करने के लचीलेपन को कैसे बनाए रखेंगे
- पीछे मुड़कर देखना कि पाठ कितनी अच्छी तरह से चला और आपके छात्र–छात्राओं ने क्या सीखा ताकि भविष्य के लिए योजना बना सकें।

पाठों की शृंखला की योजना बनाना

जब आप किसी पाठ्यक्रम का अनुसरण करते हैं, तो नियोजन का पहला भाग यह निश्चित करना होता है कि पाठ्यक्रम के विषयों और प्रसंगों को खंडों या टुकड़ों में किस सर्वोत्तम ढंग से विभाजित किया जाय। आपको छात्र–छात्राओं के प्रगति करने तथा कौशलों और ज्ञान का क्रमिक रूप से विकास करने के लिए उपलब्ध समय और तरीकों पर विचार करना होगा। आपके अनुभव या सहकर्मियों के साथ चर्चा से आपको पता चल सकता है कि किसी विषय के लिए चार पाठ लगेंगे, लेकिन किसी अन्य विषय के लिए केवल दो। आपको इस बात से अवगत रहना चाहिए कि आप भविष्य में उस सीख पर अलग तरीकों से और अलग अलग समयों पर तब लौट सकते हैं, जब अन्य विषय पढ़ाए जाएंगे या विषय को विस्तारित किया जाएगा।

सभी पाठों की योजनाओं में आपको निम्न बातों के बारे में स्पष्ट रहना होगाः

- छात्र–छात्राओं को आप क्या पढ़ाना चाहते हैं
- आप उस शिक्षण का परिचय कैसे देंगे
- छात्र–छात्राओं को क्या और क्यों करना होगा।

आप शिक्षण को सक्रिय और रोचक बनाना चाहेंगे ताकि विद्यार्थी सहज और उत्सुक महसूस करें। इस बात पर विचार करें कि पाठों की शृंखला में छात्र–छात्राओं से क्या करने को कहा जाएगा ताकि आप न केवल विविधता और रुचि बल्कि लचीलापन भी बनाए रखें। योजना बनाएं कि जब आपके छात्र–छात्रा पाठों की शृंखला में से प्रगति करेंगे तब आप उनकी समझ की जाँच कैसे करेंगे। यदि कुछ भागों को अधिक समय लगता है या वे जल्दी समझ में आ जाते हैं तो समायोजन करने के लिए तैयार रहें।

अलग–अलग पाठों की तैयारी करना

पाठों की शृंखला को नियोजित कर लेने के बाद, प्रत्येक पाठ को उस **प्रगति के आधार पर अलग से नियोजित करना होगा जो छात्र–छात्राओं ने उस बिंदु तक की है**। आप जानते हैं या पाठों की शृंखला के अंत में यह आप जान सकेंगे कि छात्र–छात्राओं ने क्या सीख लिया होगा, लेकिन आपको किसी अप्रत्याशित चीज को फिर से दोहराने या अधिक शीघ्रता से आगे बढ़ने की जरूरत हो सकती है। इसलिए हर पाठ को अलग से नियोजित करना चाहिए ताकि आपके सभी छात्र–छात्रा प्रगति करें और सफल तथा सम्मिलित महसूस करें।

पाठ की योजना के भीतर आपको सुनिश्चित करना चाहिए कि प्रत्येक गतिविधि के लिए पर्याप्त समय है और कि सभी संसाधन तैयार हैं, जैसे क्रियात्मक कार्य या सक्रिय समूहकार्य के लिए। बड़ी कक्षाओं के लिए सामग्रियों के नियोजन के हिस्से के रूप में आपको अलग अलग समूहों के लिए अलग अलग प्रश्नों और गतिविधियों की योजना बनानी पड़ सकती है।

जब आप नए विषय पढ़ाते हैं, आपको आत्मविश्वासी होने के लिए अभ्यास करने और अन्य शिक्षक/शिक्षिकाओं के साथ विचारों पर बातचीत करने के लिए समय की जरूरत पड़ सकती है।

तीन भागों में अपने पाठों को तैयार करने के बारे में सोचें। इन भागों पर नीचे चर्चा की गई है।

1 परिचय

पाठ के शुरू में, छात्र–छात्राओं को समझाएं कि वे क्या सीखेंगे और करेंगे, ताकि हर एक को पता रहे कि उनसे क्या अपेक्षित है। छात्र–छात्रा जो पहले से ही जानते हैं उन्हें उसे साझा करने की अनुमति देकर वे जो करने वाले हों उसमें उनकी दिलचस्पी पैदा करें।

2 पाठ का मुख्य भाग

छात्र–छात्रा जो कुछ पहले से जानते हैं उसके आधार पर सामग्री की रूपरेखा बनाएं। आप स्थानीय संसाधनों, नई जानकारी या सक्रिय पद्धतियों के उपयोग का निर्णय ले सकते हैं जिनमें समूहकार्य या समस्याओं का समाधान करना शामिल है। उपयोग करने के लिए संसाधनों और उस तरीके की पहचान करें जिससे आप अपनी कक्षा में उपलब्ध स्थान

का उपयोग करेंगे। विविध प्रकार की गतिविधियों, संसाधनों, और समयों का उपयोग पाठ की योजना का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यदि आप विभिन्न विधियों और गतिविधियों का उपयोग करते हैं, तो आप अधिक छात्र–छात्राओं तक पहुँच पाएँगे, क्योंकि वे विभिन्न तरीकों से सीखेंगे।

3 सीखने की जाँच करने के साथ पाठ का अन्त करना

हमेशा यह पता लगाने के लिए समय (पाठ के दौरान या उसकी समाप्ति पर) निकालें कि कितनी प्रगति की गई है। जाँच करने का अर्थ हमेशा परीक्षा ही नहीं होता है। आम तौर पर उसे शीघ्र और उसी जगह पर होना चाहिए – जैसे नियोजित प्रश्न या छात्र–छात्राओं को जो कुछ उन्होंने सीखा है उसे प्रस्तुत करते देखना – लेकिन आपको ऐसी योजना बनानी चाहिए जिसमें लचीलापन हो और छात्र–छात्राओं के उत्तरों से आपको जो पता चलता है उसके अनुसार परिवर्तन करने की गुँजाइश हो।

पाठ को समाप्त करने का एक अच्छा तरीका हो सकता है शुरू के लक्ष्यों पर वापस लौटना और छात्र–छात्राओं को इस बात के लिए समय देना कि वे एक दूसरे को और आपको उस शिक्षण से हुई उनकी प्रगति के बारे में बता सकें। छात्र–छात्राओं की बात को सुनकर आपको पता चल जायेगा कि अगले पाठ के लिए क्या योजना बनानी है।

पाठों की समीक्षा करना

हर पाठ का पुनरावलोकन करें और इस बात को नोट करें कि आपने क्या किया, आपके छात्र–छात्राओं ने क्या सीखा, किन संसाधनों का उपयोग किया गया और सब कुछ कितनी अच्छी तरह से संपन्न हुआ ताकि आप अगले पाठों के लिए अपनी योजनाओं में सुधार या उनका समायोजन कर सकें। उदाहरण के लिए, आप लिखित निर्णय कर सकते हैं:

- गतिविधियों में बदलाव करना
- खुले और बंद प्रश्नों की एक शृंखला तैयार करना
- जिन छात्र–छात्राओं को अतिरिक्त सहायता चाहिए उनके साथ अनुवर्ती सत्र (follow up session) आयोजित करना।

सोचें कि आप छात्र–छात्राओं के सीखने में मदद के लिए क्या योजना बना सकते थे या अधिक बेहतर कर सकते थे।

जब आप हर पाठ का शिक्षण करेंगे तो आपकी पाठ संबंधी योजनाएं अपरिहार्य रूप से बदल जाएंगी, क्योंकि आप हर होने वाली चीज का पूर्वानुमान नहीं कर सकते। अच्छी योजना का अर्थ है कि आप जानते हैं कि आप शिक्षण को किस तरह से करना चाहते हैं और इसलिए जब आपको अपने छात्र–छात्राओं के सीखने के वास्तविक स्तर के बारे में पता चलेगा तब आप लचीले ढंग से इसके बाद के शिक्षण को तैयार रहेंगे।

संसाधन 3: प्रगति और कार्यप्रदर्शन का आकलन करना

छात्र–छात्राओं के शिक्षण का आकलन करने के दो उद्देश्य हैं:

- **योगात्मक (Summative) आकलन** में एक पूरी अवधि में क्या सीखा गया है उसका आकलन होता है। यह सामान्यतया परीक्षाओं के स्वरूप में आयोजित किया जाता है, जहाँ छात्र–छात्राओं को परीक्षा में प्रश्नों के प्रति उनकी उपलब्धियों को बताते हुए श्रेणीकृत किया जाता है। इससे परिणामों की रिपोर्टिंग में मदद मिलती है।
- **रचनात्मक (Formative) आकलन** (या सीखने के लिए आकलन) काफ़ी अलग है, जो अधिक अनौपचारिक तथा उपचारात्मक का होता है। शिक्षक उन्हें शिक्षण प्रक्रिया के अंग के रूप में उपयोग करते हैं, उदाहरण के लिए, जहाँ यह पता लगाने के लिए प्रश्न पूछने का इस्तेमाल किया जाता है कि क्या छात्र–छात्राओं ने किसी चीज़ को समझा है या नहीं। इस आकलन के परिणामों का फिर अगले शिक्षण अनुभव को बदलने के लिए उपयोग किया जाता है। अनुश्रवण और फ़ीडबैक रचनात्मक **(Formative)** आकलन का हिस्सा है।

रचनात्मक आकलन सीखने को बल देता है, क्योंकि सीखने के लिए, अधिकांश छात्र–छात्राओं को:

- समझना होता है कि उनसे क्या सीखने की उम्मीद की जा रही है
- जानना होता है कि अपनी पढ़ाई में वे इस समय किस स्तर पर हैं
- समझना होता है कि वे किस प्रकार प्रगति कर सकते हैं (अर्थात् क्या पढ़ना चाहिए और कैसे पढ़ना चाहिए)
- जानना होता है कि कब उन्होंने लक्ष्य और अपेक्षित परिणाम हासिल कर लिए हैं।

शिक्षक/शिक्षिका के रूप में, अगर आप प्रत्येक पाठ में उपर्युक्त चार बिंदुओं पर ध्यान देंगे, तो आप अपने छात्र–छात्राओं से सर्वश्रेष्ठ परिणाम प्राप्त करेंगे। इस प्रकार पढ़ाने से पहले, पढ़ाते समय और पढ़ाने के बाद आकलन किया जा सकता है:

- **पहले:** पढ़ाने से पहले आकलन से आपको यह जानने में मदद मिलती है कि छात्र–छात्रा क्या जानते हैं और पढ़ाने से पहले क्या कर सकते हैं। यह आधार–रेखा निर्धारित करता है और आपको अपनी शिक्षण योजना तैयार करने के लिए प्रारंभिक बिंदु देता है। छात्र–छात्रा क्या जानते हैं इस बारे में अपनी समझ को बढ़ाने से, छात्र–छात्राओं को जिसमें पहले से ही महारत हासिल है, उसे दुबारा पढ़ाने या संभवतः उन्हें जो जानना या समझना है (लेकिन नहीं जानते), उसे छोड़ने के मौक़े कम होंगे।
- **पढ़ाते समय:** कक्षा में पढ़ाते समय आकलन करने में यह देखना शामिल है कि क्या छात्र–छात्रा सीख रहे हैं और उनमें सुधार हो रहा है। इससे आपको अपनी शिक्षण पद्धति, संसाधनों और गतिविधियों का समायोजन करने में मदद मिलेगी। यह आपको यह समझने में मदद करेगा कि छात्र–छात्रा वांछित उद्देश्य की दिशा में किस प्रकार प्रगति कर रहा है और आपका शिक्षण कितना सफल है।
- **पढ़ाने के बाद:** शिक्षण के बाद किया जाने वाला आकलन पुष्टि करता है कि छात्र–छात्राओं ने क्या सीखा है और आपको दर्शाता है कि किसने सीखा है और किसे अभी मदद की ज़रूरत है। इससे आप अपने शिक्षण लक्ष्य का प्रभावी आकलन कर सकेंगे।

पहले: आपके छात्र–छात्रा क्या सीखेंगे इस बारे में स्पष्ट रहना

जब आप तय करते हैं कि छात्र–छात्राओं को पाठ या पाठों की शृंखला में क्या सीखना चाहिए, तो आपको उसे उनके साथ साझा करना चाहिए। सावधानी से अंतर करें कि छात्र–छात्राओं को आप क्या करने के लिए कह रहे हैं, और छात्र–छात्राओं से क्या सीखने की उम्मीद की जा रही है। ऐसा प्रश्न पूछिये जिससे कि आपको इस बात का आकलन करने का अवसर प्राप्त हो कि उन्होंने वाक़ई समझा है या नहीं। उदाहरण के लिए:

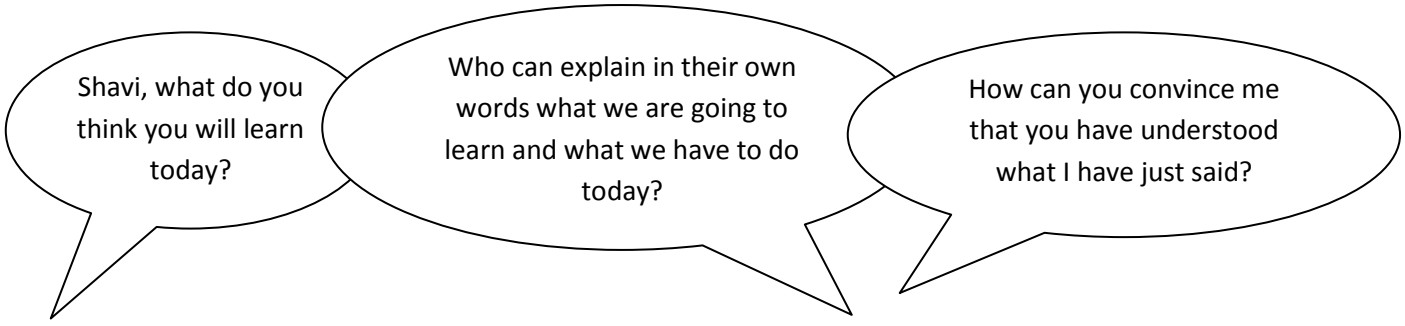

छात्र–छात्राओं को जवाब देने से पहले सोचने के लिए कुछ सेकंड दें, या शायद छात्र–छात्राओं को पहले जोड़े या छोटे समूहों में अपने जवाब पर चर्चा करने को कहें। जब वे आपको अपना उत्तर बताएँ, आप जान जाएँगे कि क्या वे समझते हैं कि उन्हें क्या सीखना है।

पहले: जानना कि छात्र–छात्रा अपने शिक्षण के किस स्तर पर हैं

आपके छात्र–छात्राओं में सुधार के लिए मदद करने के क्रम में आपको और उन्हें उनके ज्ञान और समझदारी की वर्तमान अवस्था को जानने की ज़रूरत पड़ेगी। जैसे ही आप वांछित शिक्षण परिणामों या लक्ष्यों को साझा कर लें, आप निम्नकार्य कर सकते हैं:

- छात्र–छात्राओं को मानसिक मानचित्र बनाने या उस विषय के बारे में वे पहले से क्या जानते हैं, उसे सूचीबद्ध करने के लिए जोड़े में कार्य करने के लिए कहें, और उन्हें उसे पूरा करने के लिए पर्याप्त समय दें, लेकिन उन चंद विचारों के लिए ज़रूरत से ज्यादा समय भी नहीं देना चाहिए। उसके बाद आप उन मानसिक मानचित्र या सूचियों की समीक्षा करें।
- महत्वपूर्ण शब्दों को बोर्ड पर लिखें और प्रत्येक शब्द के बारे में वे क्या जानते हैं, यह बताने के लिए स्वेच्छा से उन्हें आगे आने के लिए कहें। फिर बाक़ी कक्षा से कहें कि यदि वे शब्द समझते हैं, तो अपना अंगूठा थम्ब्स–अप की मुद्रा में ऊपर उठाएँ, यदि वे बहुत कम जानते हैं या बिल्कुल नहीं जानते हैं, तो थम्ब्स–डाउन की मुद्रा में नीचे करें और यदि वे कुछ जानते हैं, तो अंगूठे को क्षैतिज यानी बीच में रखें।

कहाँ से शुरुआत करनी है, यह जानने का मतलब है कि आप अपने छात्र–छात्राओं के लिए प्रासंगिक और रचनात्मक रूप से पाठ की योजना बना सकते हैं। यह भी महत्वपूर्ण है कि आपके छात्र–छात्रा यह आकलन करने में सक्षम हों कि वे कितनी अच्छी तरह सीख रहे हैं, ताकि आप और वे, दोनों जान सकें कि उन्हें आगे क्या सीखने की ज़रूरत है। आपके छात्र–छात्राओं को स्वयं अपने शिक्षण का भार उठाने का अवसर प्रदान करने से उन्हें आजीवन शिक्षार्थी बनाने में मदद मिलेगी।

पढ़ाते समयः शिक्षा में छात्र–छात्राओं की प्रगति सुनिश्चित करना

जब आप छात्र–छात्राओं से उनकी वर्तमान प्रगति के बारे में बात करते हैं, तो सुनिश्चित करें कि उन्हें आपका फीडबैक (प्रतिपुष्टि) उपयोगी और रचनात्मक, दोनों लगे। निम्नांकित के द्वारा इस काम को करें:

- छात्र–छात्राओं को उनकी ताक़त और यह जानने में मदद करना कि वे कैसे और सुधार कर सकते हैं
- इस बारे में स्पष्ट रहना कि आगे और किस चीज़ के विकास की ज़रूरत है
- इस बारे में सकारात्मक रहना कि वे किस प्रकार अपनी शिक्षा का विकास कर सकते हैं, जाँचना कि वे समझते हैं और आपकी सलाह का उपयोग करने में सक्षम महसूस करते हैं।

आपको छात्र–छात्राओं के लिए उनके शिक्षण को बेहतर बनाने के लिए अवसर देने कराने की ज़रूरत पड़ेगी। इसका अर्थ यह हुआ कि पढ़ाई के मामले में छात्र–छात्राओं के वर्तमान स्तर और जहाँ आप उन्हें देखना चाहते हैं, इसके बीच के अंतराल को पाटने के लिए हो सकता है कि आपको अपनी पाठ योजना को संशोधित करना पड़े। ऐसा करने के लिए आपको निम्नतः करना होगाः

- कुछ ऐसे कार्य पर वापस नज़र दौड़ाना होगा, जिनके बारे में आपने सोचा था कि वे पहले से जानते हैं
- आवश्यकता के अनुसार छात्र–छात्राओं के समूह बनाना, उन्हें अलग–अलग कार्य देना
- छात्र–छात्राओं को स्वयं यह निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित करना कि उन्हें किन संसाधनों को पढ़ने की ज़रूरत है ताकि वे 'स्वयं अपना अंतराल पाट सकें'
- 'निम्न प्रवेश, ऊँची सीमा' वाले कार्यों का उपयोग करना, ताकि सभी छात्र प्रगति कर सकें – इन्हें इसलिए अभिकल्पित किया गया है कि सभी छात्र–छात्रा काम शुरू कर सकें, लेकिन अधिक समर्थ को प्रतिबंधित न किया जाए और वे अपने ज्ञान के विस्तार के लिए प्रगति कर सकें।

पाठों की रफ्तार को धीमा करके, अक्सर आप पढ़ाई को तेज़ करते हैं, क्योंकि आप छात्र–छात्राओं को उस पर सोचने और समझने का समय और आत्मविश्वास देते हैं, जिसमें उन्हें सुधार लाने की ज़रूरत होती है। छात्र–छात्राओं को आपस में अपने काम के बारे में बात करने का मौक़ा देकर, और इस बात पर चिंतन करके कि अंतराल कहाँ पर है और वे इसे किस प्रकार से ख़त्म कर सकते हैं, आप उन्हें स्वयं का आकलन करने के तरीक़े उपलब्ध करा रहे हैं।

पढ़ाने के बादः प्रमाण एकत्रित करना और उसकी व्याख्या करना, और आगे की योजना बनाना

जब पढ़ाना–सिखना चल रहा हो और कक्षा–कार्य और गृह–कार्य निर्धारित करने के बाद, ज़रूरी है किः

- इस बात का पता लगाएँ कि आपके छात्र–छात्रा कितनी अच्छी तरह कार्य कर रहे हैं
- इसे अगले पाठ के लिए अपनी योजना बनाते समय उपयोग में लाएँ
- छात्र–छात्राओं को फीडबैक (प्रतिपुष्टि) दें।

आकलन की चार प्रमुख स्थितियों की नीचे चर्चा की गई है।

सूचना या प्रमाण एकत्रित करना

प्रत्येक छात्र–छात्रा, स्वयं अपनी गति और शैली में, स्कूल के अंदर और बाहर अलग प्रकार से सीखता है। इसलिए, छात्र–छात्राओं का आकलन करते समय आपको दो चीज़ें करनी होंगीः

- विविध सूत्रों से जानकारी एकत्रित करें – स्वयं अपने अनुभव से, छात्र, अन्य छात्र–छात्राओं, अन्य शिक्षक/शिक्षिकाओं, अभिभावकों और समुदाय के सदस्यों से।
- छात्र–छात्राओं को व्यक्तिगत रूप से, जोड़ों में और समूहों में आकलन करें, तथा स्व–आकलन को बढ़ावा दें। अलग विधियों का प्रयोग महत्वपूर्ण है, क्योंकि कोई एक पद्धति आपके वह सभी जानकारी उपलब्ध नहीं कराती, जिसकी आपको ज़रूरत है। छात्र–छात्राओं के सीखने और प्रगति के बारे में जानकारी इकट्ठा करने के विभिन्न तरीक़ों में शामिल हैं, देखना, सुनना, विषयों और प्रकरणों पर चर्चा, तथा लिखित वर्ग और गृह–कार्य की समीक्षा करना।

अभिलेखन

भारत भर के सभी स्कूलों में रिकॉर्डिंग का सबसे सामान्य तरीका रिपोर्ट कार्ड के उपयोग के माध्यम से होता है, लेकिन इसमें आपको एक छात्र–छात्रा के सीखने या व्यवहार के सभी पहलुओं को रिकॉर्ड करने की अनुमति नहीं हो सकती है। इस काम को करने के कुछ सरल तरीक़े हैं, जिन पर भी आप विचार कर सकते हैं, जैसे किः

- पढ़ाते–सीखते समय जो आप देखते हैं उसे डायरी/नोटबुक/रजिस्टर में नोट करना
- छात्र–छात्राओं के कार्य के नमूने (लिखित, कला, शिल्प, परियोजनाएँ, कविताएँ आदि) पोर्टफ़ोलियो में रखना
- प्रत्येक छात्र–छात्रा का प्रोफ़ाइल तैयार करना
- छात्र–छात्राओं की किन्हीं असामान्य घटनाओं, परिवर्तनों, समस्याओं, शक्तियों और शिक्षण प्रमाणों को नोट करना।

प्रमाण की व्याख्या

जैसे ही सूचना और प्रमाण एकत्रित और अभिलिखित हो जाए, उसकी व्याख्या करना ज़रूरी है, ताकि यह समझ सकें कि प्रत्येक छात्र–छात्रा किस प्रकार सीख रहा है और प्रगति कर रहा है। इस पर सावधानी से विचार करने और विश्लेषण की आवश्यकता है। फिर आपको शिक्षण में सुधार करने, संभवतः छात्र–छात्राओं को फ़ीडबैक (प्रतिपुष्टि) देकर या नए संसाधनों की खोज करके, समूहों को पुनर्व्यवस्थित करके, या शिक्षण बिंदु को दोहरा कर अपने निष्कर्षों पर कार्य करने की आवश्यककता है।

सुधार के लिए योजना बनाना

आकलन, विशिष्ट और विभेदक शिक्षण गतिविधियों की स्थापना द्वारा प्रत्येक छात्र को सार्थक रूप से सीखने के अवसर प्रदान करने, अधिक मदद के ज़रूरतमंद छात्र–छात्राओं पर ध्यान देने और अधिक उन्नत छात्र–छात्राओं को चुनौती देते हुए सार्थक शिक्षण अवसर उपलब्ध कराने में आपकी मदद कर सकते हैं।

संसाधन 4: पाठ योजना – भारत के बच्चों के नाम एक पत्र

आप इस अध्याय योजना की संरचना का उपयोग किसी भी पाठ या गद्यांश के साथ कर सकते हैं। इसके विभिन्न अंगों को एक ही कक्षा में, या कई कक्षाओं में संचालित किया जा सकता है।

पठन–पूर्व

1. बोर्ड पर शीर्षक लिखें, और समझाएं कि पत्र किस बारे में है (एक वृद्ध आदमी भारत के बच्चों को सलाह दे रहे हैं)।
2. मैंने अपने छात्र–छात्राओं से कुछ सलाह सोचने के लिए कहा जो वे भारत के बच्चों को देना चाहेंगे। एक या दो सुझाव स्वीकार करें और उन्हें ब्लैकबोर्ड पर अंग्रेजी में लिखें।
3. छात्र–छात्राओं को जोड़ियों में संगठित करें। प्रत्येक जोड़ी से पाँच सलाहों पर चर्चा करने और उन्हें अंग्रेजी में लिखने को कहें। उनसे कहें कि गलतियाँ हो जाने के बारे में चिंता न करें।
4. तीन मिनट बाद, छात्र–छात्राओं से लिखना बंद करने को कहें, और तीन या चार समूहों को कुछ उदाहरण पढ़ने को कहें।

सुझावः याद रखें कि यह चरण विचार प्राप्त करने और पाठ के लिए तैयारी करने के बारे में है। गलतियों पर ध्यान न दें। बल्कि विषय–वस्तु पर ध्यान दें; यानी, वह सलाह जो आपके छात्र–छात्रा सुझा रहे हैं।

पढ़ते समय

1. छात्र–छात्राओं से पत्र को मौन होकर पढ़ने को कहें। उन्हें पत्र को पढ़ते समय उस सलाह को रेखांकित करने को कहें जो नेहरूजी देते हैं। छात्र–छात्राओं को पत्र पढ़ने और सलाह की खोज करने के लिए एक समय सीमा दें।
2. जब समय समाप्त हो जाय, तब छात्र–छात्राओं से उन्हें मिली सलाह की तुलना किसी सहपाठी (जोड़ी के रूप में), या सहपाठियों (समूह के रूप में) के साथ करने को कहें। उनसे नेहरूजी की सलाह और उनकी अपनी सलाह के बीच समानताओं और भिन्नताओं पर चर्चा करने को कहें।
3. जब छात्र–छात्रा पत्र पर चर्चा करें, तब कमरे में घूमें और नोट करें कि छात्र–छात्राओं ने उसे कितनी अच्छी तरह से समझा है। यदि छात्र–छात्राओं को कोई समस्याएं हो रही हों, तो उनकी सहायता करें।
4. कुछ मिनट बाद, छात्र–छात्राओं से बात करना बंद करने को कहें और उस सलाह पर चर्चा करें जो नेहरूजी सारी कक्षा को देते हैं।

सुझावः यह आपके लिए यह देखने का अवसर है कि आपके छात्र–छात्राओं ने पत्र को कितनी अच्छी तरह से समझा है। कोई बात नहीं यदि उन्होंने पाठ के हर शब्द को नहीं समझा है, लेकिन आपको यह देखना है कि उन्होंने सबसे महत्वपूर्ण बातें समझ ली हैं। क्या आपके अधिकांश छात्र–छात्रा उस सलाह को खोज पाए हैं जो नेहरूजी देते हैं? यदि नहीं, तो वह क्या चीज़ है जो उन्हें समझने से रोक रही है? आप उनकी सहायता कैसे कर सकते हैं? कुछ छात्र–छात्राओं ने अन्यों से अधिक समझा है। शायद वे समझा सकते हैं।

पठन–पश्चात् (Post Reading)

1. सलाह देने के लिए कुछ वाक्यांश बोर्ड पर लिखें:

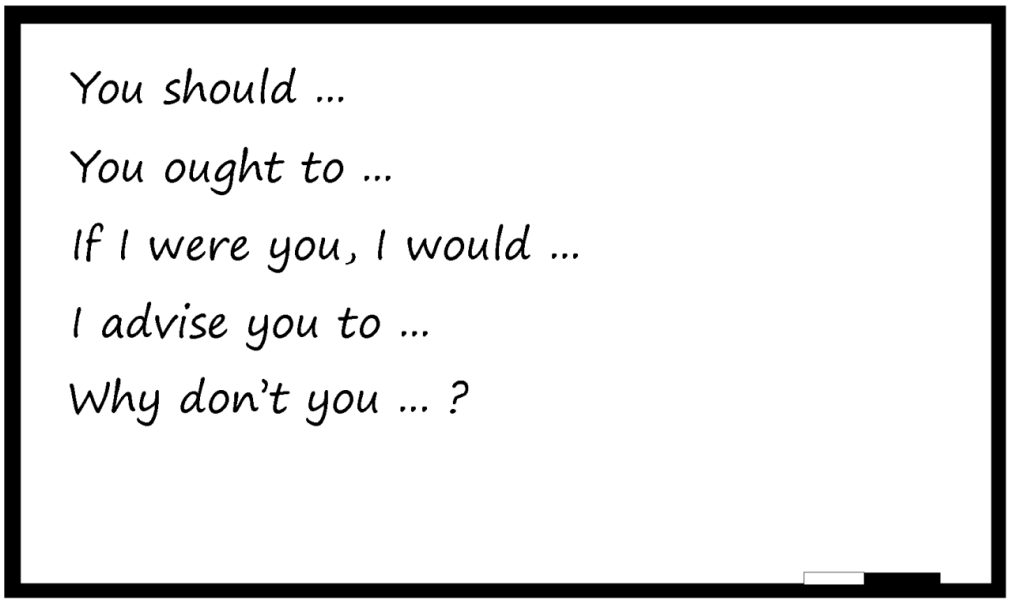

2. अपने छात्र–छात्राओं से कल्पना करने को कहें कि वे बूढ़े दादा या दादी हैं। उनसे ऐसी कुछ सलाह सोचने को कहें जो वे अपने पोते–पोतियों को दे सकते हैं। आप एक उदाहरण दे सकते हैं: 'आपको कठिन परिश्रम करना चाहिए।'
3. बोर्ड पर सुझाव लिखें, उदाहरण के लिए:

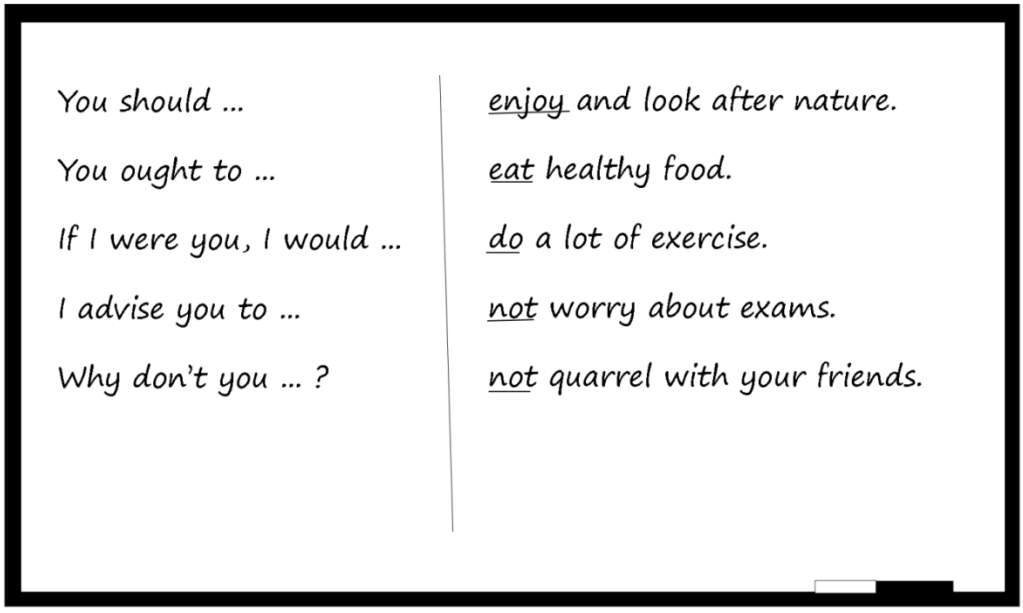

4. स्पष्ट करें कि छात्र–छात्रा किसी भी शुरूआत का उपयोग किसी भी अंत के साथ कर सकते हैं। क्रियार्थक संज्ञा का उपयोग स्पष्ट करें। वाक्यों को ऊँची आवाज में पढ़ें और छात्र–छात्राओं से उच्चारण को दोहराने के लिए कहें।
5. छात्र–छात्राओं को जोड़ियों में संगठित करें, और भूमिकाएं दें: एक छात्र दादा या दादी है; दूसरा पोता या पोती है। दादा या दादी की भूमिका निभाने वाले छात्र को दूसरे छात्र को सलाह देनी चाहिए।
6. कुछ मिनटों के बाद, छात्र–छात्राओं को भूमिकाओं की अदला–बदली करने को कहें।
7. छात्र–छात्राओं से स्वयं अपना 'भारत के बच्चों के नाम एक पत्र' शीर्षक वाला पत्र लिखने को कहें।

सुझाव: किसी पाठ की थीम के बारे में बोलने और लिखने की गतिविधियाँ आपके छात्र–छात्राओं को उसमें प्रयुक्त भाषा का अभ्यास करने का अच्छा अवसर प्रदान करती हैं। यहाँ यदि आप चाहते हैं तो भाषा के सटीक उपयोग पर ध्यान दे सकते हैं। इस प्रकार की गतिविधियाँ छात्र–छात्राओं को पाठ्यपुस्तक के अध्यायों के प्रति अनुक्रिया करने, और उन्हें अपने जीवन के साथ संबंधित करने का अवसर भी देती हैं।

संसाधन 5: स्वयं अपनी अंग्रेज़ी का विकास करें

Here are some tips and links for developing your own reading skills:

- The best way to develop your skills in reading English is to read as much as you can – English newspapers and magazines, etc. Exchange English texts with colleagues and friends. Use a library, if this is possible.
- Read regularly. Find a time to read each week, and if possible, find a quiet comfortable place where you will not be disturbed.
- Use the techniques that you have read about in this unit. Use pictures, titles, sub-titles to get an idea of what the text is about. Read silently for as long as you can. It doesn't matter if you read short extracts.
- Don't try to understand every word. Try to understand the overall message or idea. Don't look up every word in a dictionary – try to guess meanings of words if you can, and just look up key words. Remember that you can read texts as many times as you like.
- Finally, read the things you enjoy. Read stories if you enjoy them, or read cricket news if that's how you like to spend your time.
- You may find the following resources useful:
- Stories and poems for learners of English (with activities): http://learnenglish.britishcouncil.org/en/stories-poems
- Articles about many different topics for learners of English (with audio and activities): http://learnenglish.britishcouncil.org/en/magazine
- BBC news for Asia: http://www.bbc.co.uk/news/world/asia/
- *Times of India* online: http://timesofindia.indiatimes.com/

अतिरिक्त संसाधन

- 'How useful are comprehension questions?' by Mario Rinvolucri: http://www.teachingenglish.org.uk/article/how-useful-are-comprehension-questions
- A series of articles by Dave Willis about reading: http://www.teachingenglish.org.uk/articles/reading-information-motivating-learners-read-efficiently
- 'Theories of reading' by Shahin Vaezi: part 1, http://www.teachingenglish.org.uk/articles/theories-reading; part 2, http://www.teachingenglish.org.uk/articles/theories-reading-2
- 'What is reading?' by Adrian Tennant: http://www.onestopenglish.com/skills/reading/reading-matters/reading-matters-what-is-reading/154842.article

- 'Success in reading': http://orelt.col.org/module/3-success-reading

संदर्भ / संदर्भग्रंथ सूची

Gupta, S.P. (ed.) (2012) *English (A Textbook for Class X)*, revd edn (revised by K.D. Upadhyay). Noida: Banwari Lal Kaka & Sons (Publishers).

National Focus Group on Teaching of English © National Council of Educational Research and Training, 2006.

Nehru, J. (1949) 'Letter to the children of India', 3 December. Available from: http://articles.timesofindia.indiatimes.com/2002-11-14/edit-page/27299288_1_grown-ups-eyes-and-ears-beautiful-world (accessed 29 July 2014).

अभिस्वीकृतियाँ

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन–शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है (http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/)। नीचे दी गई सामग्री मालिकाना हक की है तथा इस परियोजना के लिए लाइसेंस के अंतर्गत ही उपयोग की गई है, तथा इसका Creative Commons लाइसेंस से कोई वास्ता नहीं है। इसका अर्थ यह है कि इस सामग्री का उपयोग अननुकूलित रूप से केवल TESS-India परियोजना के भीतर किया जा सकता है और किसी भी बाद के OER संस्करणों में नहीं। इसमें TESS-India, OU और UKAID लोगो का उपयोग भी शामिल है।

इस इकाई में सामग्री को पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति के लिए निम्न स्रोतों का कृतज्ञतापूर्ण आभारः

गतिविधि 1: पाठ्यपुस्तक *अंग्रेजी में बेन जॉनसन की 'द परफेक्ट लाइफ':* [Activity 1: 'The Perfect Life' by Ben Jonson, in the textbook *English:*] *कक्षा 10,* NCERT के लिए एक पाठ्यपुस्तक। [*A Textbook for Class X*, NCERT]

'यह इकाई किस बारे में है' / केस स्टडी 1: UPS कल्लि पश्चिम के शिक्षक। ['What this unit is about'/Case Study 1: teacher from UPS Kalli Paschim.] अनुमति प्रदान की गई। [Permission granted.] फोटोः [Photo:] किम ऐशमोर। [Kim Ashmore.]

संसाधन 1: नेहरू, जे. (1949) 'भारत के बच्चों के नाम एक पत्र', 3 दिसंबर। [Nehru, J. (1949) 'A letter to the children of India', 3 December.]

कॉपीराइट के स्वामियों से संपर्क करने का हर प्रयास किया गया है। यदि किसी को अनजाने में अनदेखा कर दिया गया है, तो पहला अवसर मिलते ही प्रकाशकों को आवश्यक व्यवस्थाएं करने में हर्ष होगा।

वीडियो (वीडियो स्टिल्स सहित): भारत भर के उन शिक्षक प्रशिक्षकों, प्रधानाध्यापकों, शिक्षकों और छात्र–छात्राओं के प्रति आभार प्रकट किया जाता है जिन्होंने उत्पादनों में दि ओपन यूनिवर्सिटी के साथ काम किया है।